सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मई-जून, 2011

विधवा का विश्वास

' ..... और बहुत- से धनवान बड़ी- बड़ी रकम डाल रहे थे | इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर तांबे के दो छोटे- छोटे सिक्के डाले जिनका मूल्य लगभग एक पैसे के बराबर होता है |' मरकुस (१२-४१..४४)

यीशु देख रहे थे | ऐसा दिख रहा था जैसे कि धनवान अपने को बधाई देते हुए दानपात्र में पैसा डाल रहे थे| वह इस कृतज्ञता से नहीं दे रहे थे कि परमेश्वर ने उन्हें इस लायक किया कि उसके राज्य के लिए व ह दान दे सके| जहाँ तक विधवा का प्रश्न है, गणित के अनुसार, उसने सौ प्रतिशत दिया और वह उन धनी लोगों से अधिक दान था | यह देने वाले के हाथ पर निर्भर नहीं करता लेकिन किस मन से दिया है , उसका अधिक महत्व है | हम परमेश्वर को घूस दे रहे हों , इस प्रकार दान नहीं देना चाहिए|

'परमेश्वर को विधवाओं का खास ध्यान रहता है | वह विधवा का ही तेल था जिसे ऐहल्या, परमेश्वर के जन, ने कई गुणा बढ़ाया | ऐसी विधवा जो टूटे मन की है परमेश्वर को अति स्वीकार्य है|' हमारे परमेश्वर और पिता के निकट

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

ETC TV ***चैनल पर***

हर ***शनिवार सुबह 7:00*** *से* ***7:30*** *बजे*

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया

"इन बाहरी बातों के अतिरिक्त मुझे प्रतिदिन कलीसियाओं की चिन्ता दबाए रहती है।" 2 कुरिन्थियों(11:28)

सन्त पौलुस अपने जीवन में, कई मुसीबतों और विपत्तियों से गुजरे थे । उन विपत्तियों की सूची के अन्त में वे कहते है, "इन बाहरी बातों के अतिरिक्त मुझे प्रतिदिन कलीसियाओं की चिन्ता दबाए रहती है। " कोड़े खाना, बन्दी होना और यहाँ तक की पथराव सहना उनके लिए एक मामूली बात थी। मगर सारी कलीसियाओं के प्रति जिम्मेवारी और उनके लिए चिन्ता उनका मुख्य बो झ था। उनके आत्मा पर यह बोझ प्रतिदिन बना रहता था। दूसरों के प्रति महत्व का अभाव, और गैर जिम्मेवारी , आज कल हमारे जमाने का और अधिक निशान बन रहें है।

आज, हमारे चारों तरफ, लोगों को जब हम देखते है , तुरन्त यह स्पष्ट होता है कि उन में से कई लोग अपने ही दुखों और बोझों को लिए संघर्ष कर रहें है। समस्यायें, समस्यायें, समस्यायें! यह शब्द "समस्या" कई लोगों के शब्द संग्रह का प्रिय शब्द बन गया है। दिन बढ़ती कठिनाइयों की बोझ के तले दबे उनकी नसें फट रही हैं, उनका घर छोटा सा नरक बन रहे है। अपने सिवाय किसी और के लिए उनके पास ना तो आँ सू है ना सोच-विचारे। यह कितनी दुखद बात है!

अब एक मसीही ऐसा कभी नहीं रह सकता। हो सकता है कि वह पहले से ही हजारों के आँसूओं को बाँट रहें हो और कई लोगों के बोझ का वजन को उठा रहें हो। फिर भी उसके पास वह अतिरिक्त क्षमता रहती है कि वे और कुछ आत्माओं का बोझ उठायें, और उनसे प्रेम करें। इस तरह परमेश्वर हमें अत्यधिक सहनशील, लचीला और असीम रुप से खुले दिल वाला बनाते है। कुछ लोग कहते है , "यह कैसे संभव है ?" मगर ऐसा होते , मैं हर समय खुद अपनी जिन्दगी में देखता हूँ। और ऐसे लोगों के जीवन में भी जो यीशु के पद चापों में चलने की कोशिश में लगे है।

"कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाए रहती है। " हमे कितना सावधान रहना है कि चीजों की चिन्ता किये बिना और भौतिकवाद में अधिक और अधिक धसते जाने के बजाय नष्ट हो रही आत्माओं को और महत्व दें। और परमेश्वर को पुकारें। या फिर ऐसा कहें "मैं सिर्फ अपनी कलीसिया या छोटा सा अपना समूह में ही दिलचस्पी रखता हूँ। " हम सिर्फ अपने देश को लिए संकीर्ण, सीमित और यहाँ तक की जातिवाद से व्यामोही नहीं बन सकते। यह कलीसियायें जिनके लिए सन्त पौलुस प्रतिदिन प्रार्थना करते थे और तरसते थे भूगोल के विशाल क्षे त्र में बिखरी हुई थीं। इसलिए वे किसी एक राज्य से संबन्धित नहीं है। जिस फैलोशिप में, सेवक होने के लिए मुझे बुलाया गया और जहाँ से मैं कई देशों में प्रचार और प्रयास करने जाता हूँ , यहाँ हमें सिखाया जाता है कि हम सब लोगों से प्यार करें। इसलिए हमारे बीच में भा षा, जाति, वर्ग, रंग या और किसी तरह का विभाजन या अवरोध नहीं है। मसीही ने सब के लिए

अपना प्राण दिया था। मसीह प्रेम और दिलचस्पी में कोई संकीर्ण सीमायें नहीं होती।

अगर कोई व्यक्ति , चाहे वह समय पर आये या ना आये मगर अपने वाध्य को जोर से बजाता है, ऊपर-नीचे उछलता और लाय के साथ झूमता-नाचता है , तो वही शहर का अच्छा मसीही है – कई मसीही समूहों में यही प्रकृति फैल रही है। आपको जाकर देखना होगा कि उसके बिस्तर के बगल में दरी , घुटनो के बल गिरकर प्रार्थना करने से घिसा है। या फिर आइने के सामने उसके कठोर मेहनत से वहाँ की दरी घिसी है। दुख में डूबे किसी के लिए पिछले दिनों में उसने कब आँसू बहाये या फिर किसी के लिए रोया है, जो शैतान के क्रूर चंगुल में फंसा है। आज हमारे कई आदर्श गलत है। इस तरह अपने आपको धोखा देने के लिए हम सब को पश्चाताप करना होगा।

इग्लैण्ड के एक कोने में, एक छोटी सी कलीसिया ने इ थियोपिया में अकाल-पीड़ितों की मदद के लिए अस्सी हजार पौण्ड इकट्ठे किये । मुझे ताजुब्ब हुआ कि वहाँ उस समय कई क्षेत्रों में फैली हुई बेरोजगारी के बावजूद, बीस या तीस साधारण व्यक्ति इतनी बड़ी रकम को जोड़ पाये। निःसन्देह , यह उनकी विशाल करुणा को दर्शाता है। उनकी अटल इच्छा को दिखाता है कि बिना रोटी के या उनकी तरफ किसी भी प्रयास की अभाव से वहाँ के बच्चे ना मर जाये। ऐसे प्यार भरे लोगों के लिए , हम सब परमेश्वर की स्तुति करें।

हाल में , सुनामी की विपत्ति के बाद, हमारे सामने कई अनाथ बच्चे , बेघर लोगों का चित्र है। क्या उनके लिए प्रार्थना और मदद करने हमारा जी भरा आता है? बिना मसीह के आदमी- औरत और बच्चों के तस्वीर , उनकी विह्व ल, छिन्न-भिन्न, रूधिर स्रवित आत्माओं को नही दिखाता है। हमें उनको ऐसा देखना है जैसे मसीह उन को देखते है। ऐसी आत्माओं तक पहुँ चने के लिए हमारी नस-नस मेहनत करे , हर आँसू निचोड़े और जो कुछ भी हो खर्च करें।

मैं हमेशा अपने आपसे कहता रहता हूँ, "मैं परमेश्वर और आत्माओं के लिए कितना कम काम कर रहा हूँ!" यह शर्म की बात है कि आज कल अपने आपको मसीही कहने वाले लोगों के मन में बिना मसीह के करोडों लोगों के प्र ति जरा सा भी बोझ या क्रियाशी ल महत्व नहीं है। हम परमेश्वर को क्या जवाब देंगें? क्या इन सारी आत्माओं का बोझ हम पर आये? क्या हम कभी अपने स्वामी और प्रभु की तरह कार्य करते , जबकि उन्होंने कहा, "मेरी और भी भेड़े हैं जो इस भेड़शाला की नहीं। मुझे उनको भी लाना अवश्य है।"

कृपया यह जान लें , जब आप दूसरों को ऊपर उठाते हो , तो आप और प्रबल बन जाते हो। जब आप परमेश्वर के कार्य के निर्माण में व्यस्त हो कि अधिक आत्मायें यीशु मसीह के राज्य में लायी जाएंगी, तब आप और अधिक धनवान बनते जाते हो। और आपकी जिन्दगी और खूबसूरत बनती जायेगी। किसी पुराने घाव को चाटते मत रहो, जो किसी ने दिये हों या वे आप ही के कुछ स्वार्थी का र्य का नतीजा हो। यह समय आत्माओं के लिए रोने का है। परमेश्वर ने हमें जहाँ रखा है , वहाँ लोगों तक पहुँचने , प्रयास करने का यह समय है और भू-दिगन्तों तक भी।

- जोशुआ दानिय्येल।

पृष्ठ 1 से ... विधवा का विश्वास

शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं की व्यथा में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें|' याकूब (१-२७)

यहाँ पर इस विधवा में न तो घृणा, न कुड़कुड़ाना और न परमेश्वर के प्रति अविश्वास था | धनी व्यक्ति में दूसरा ही विचार भाव था | उनके धन ने उन्हें आत्मसंतोष में गाड़ दिया था और इस कारण उनकी प्रतिभाएँ नही उभर सकीं | परमेश्वर धनवान व्यक्ति ' में ' बहुलता उसके धन से अधिक देखता है | यह तुम्हारा व्यक्तित्व , जीवन और प्रचार है जिस पर परमेश्वर निर्भर करता है| लेकिन वह विश्वास की आशा करता है | मसीह परिवारों में कितने नौजवान लोगों की जल्द ही मृत्यु हो जाती है. न तो उन्होंने परमेश्वर की परवाह की , न विश्वास करना सीखा और अब वह बिमारी का सामना करने में असमर्थ हैं . उनकी मृत्यु कितनी बड़ी हानि है | धनी व्यक्ति की योग्यता कभी नहीं बढ़ पाती | धनवानों का धन उन्हीं में भरा है और संसार की भलाई के लिए दी गई योग्यताएँ उनमें छिपी रह जाती हैं|

हडसन टेलर और वैसली (जोन वैसली) 'कैसे, उन्होंने अपनी आत्मिक योग्यताओं को बढ़ाया और उससे संसार की भलाई कर , यह सिद्ध कर दिखाया | कितने ही आदमी हैं जो अपने जीवन के मध्य में धनी बने , अब परमेश्वर के राज्य के लिए बेकार हो गए हैं | कईयों ने यह अपने विवाह में पाया और कईयों ने अपनी धुन में कमाया | वह धन था जिस पर उनकी निगाह थी और धन ही था जो उन्होने पाया| हाँ,

यह ज़रूर है कि वह परमेश्वर की देते है| लेकिन वह स्वंय को उसे नहीं समर्पित करते| इस विधवा ने सब कुछ दे

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

दिया|

किसने परमेश्वर के मन को जाना है ? क्या तुम जानते हो तुम्हारे लिए उसने कितना दिया है ? यदि तुम जान जाओगे तो अपना सबकुछ न्यौछावर कर दोगे | तुम अपने को बिलकुल खाली कर दोगे | ' हांडी को खाली कर दो और तेल के पात्र को खाली कर दो', यही एलिहा ने कहा था| ' तुम देखोगे वह कैसे दुबारा भर जाएगा|'

परमेश्वर ने नबी को ज़ारे फात की विधवा के पास भेजा | वह मृत्यु को जीवन और दुख को खुशी में बदलने आया था| निराशा तुम्हें हराने न पाए | जब तुम्हारे साधनों का अन्त आ जाता है, वह परमेश्वर का समय है, परमेश्वर के लिए मौका| जब तक तुम्हारे पास सहारा है| तुम उसी पर नि र्भर रहते हो और उसी दिशा में ताकते रहते हो | लेकिन जब तुम्हारे पास कोई सहारा नहीं रहता| तब तुम विधवा की भाँति निराशा के स्थान पर पहुँचते हो , विधवा की भाँति टूटे हुए और यही परमेश्वर के लिए अवसर है | विधवा के लिए भविष्य में कुछ नहीं बचा था | लेकिन परमेश्वर ने उसका भविष्य बनाया | परमेश्वर को उसका ध्यान था | जब तुम्हारी सहायता के लिए कोई नहीं है , परमेश्वर तुम्हारी सहायता करेगा|

एक अवसर पर साधु सुन्दर सिंह रेगिस्तान में अपना मार्ग खो बैठा| उस असहायपन में , उसने परमेश्वर को पुकारा| उसे अपने चारों ओर रेत के अलावा कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा था | तब वहाँ एक व्यक्ति आया और धीरे से बातें करने लगा , उसकी सारी थकान जाती रही| जल्द ही वह एक गांव के पास पहुँचे और वह व्यक्ति अदृश्य हो गया| सुन्दर जान गया कि वह एक स्वर्गदूत था|

परमेश्वर के स्वर्गदूत निराश लोगों पर ध्यान लगाए हुए हैं | यह परमेश्वर की इच्छा नहीं कि कोई भी निराशा में मरे | तुम्हारे लिए परमेश्वर महान विचार रखे हुए है | जब तुम निराशा के समय में पहुँचते हो , तब परमेश्वर की महिमा देखोगे| अपना हृदय नम्र रखो| तब तुम परमेश्वर की आशिष देखोगे और वह तुम्हें बढ़ाएगा|

एक किशोरावस्था की विजय

तीन नौजवानों की मृत्यु , ३ कार दुर्घटना में तीन घायल ', पाम स्परिंग(स्थान का नाम), जून ६| इस दोपहर तीन नौजवान मारे गए और अन्य तीन त्रिकोणिय आमने- सामने की कार टक्कर में घायल हुए , यह दुर्घटना मुख्यमार्ग-१११, इस पर्यटन मरूस्थलिय शहर के उत्त री छोर पर घटी | मृतकों में राबर्ट जोसलिन ... उसकी यात्री - कैरन रूथ जोनसन १७ वर्षीय ...' इन शब्दों के साथ 'लास एन्जलिस टाइम्स ' के संवाददाता ने अखबार के मुख्य पृष्ठ पर खबर इस इ्गैले हुए लास एन्जलैस शहर पर उजागर की कि एक भयंकर दुर्घटना निकटीय पाम स्परिंग में घटी|

तीन नौजवान अपने नवयौवन में ही मारे गये और चौथा भी शीघ्र ही दुर्घटना में लगे घावों के कारण मर गया|

यह संवाददाता इस बात को नहीं जानता था कि कैरन जोनसन का परिवार एक पुस्तिका प्रकाशित करेगा , जिसकी व्याख्या, इस निश्चि त दुर्घटना, की मानवीय दृष्टिकोण में ऐसे करेगा ' एक किशोरावस्था की विजय'| इस पुस्तिका की लगभग १०००,००० प्रतियाँ, बारह विभिन्न भाषाओं में अब तक बाँटी जा चुकी हैं|

'विजय ?'

ऐसा कैसे हो सकता है कि एक शोकमय परिवार अपने एक प्रिय परिजन की आकस्मिक मृत्यु को इस दृष्टिकोण से देखे| और इस परिवार का यह विश्वास कि मृत्यु भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती|

'समर्पित '

दूसरे मसीह माता- पिताओं की भाँति एडवड जोनसन और जोयस जोनसन ने अपनी ज्येष्ठ पुत्री को परमेश्वर को समर्पित करने का निर्णय लिया | एक रविवार की सुबह वे शिकागो शहर की 'मूडी मैमो रियल चर्च ' गये, जहाँ समर्पण अराधना सभा में पादरी ' हैरी आयर्नसाइड ' ने प्रार्थना की कि प्रभु इस नन्हीं बालिका को आशिषित करें | जोनसन परिवार के लिये यह रिवाज़ मात्र नहीं था | वे यह विश्वास करते थे कि प्रभु ने 'कैरन रूथ' को एक उपहार के रूप में उन्हें दिया है | कैरन पर परमेश्वर का अधिकार था , उनका नहीं| इस बात को पक्का करने के लिये कि आगे चल कर कैरन इस बात को समझे कि वह प्रभु को समर्पित है, एड जोनसन ने इस सभा कि रिकार्डिंग भी की|

बचपन से ही कैरन उत्साही थी| उसे खेलना बहुत प्रिय था | उसे अपने माता-पिता से पवित्र बाईबल की कहानियाँ सुनना बहुत भाता था | एक शाम जब वह पाँच वर्ष की थी, उसने अपनी माँ से कहा, ' मैं अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित करना चाहती हूँ |' उसने धरती पर घुटने टेके और प्रभु यीशु को अपने मन में आने के लिए आमंत्रित किया|

'तीन घर'

अधिक समय न बीता था , जोनसन परिवार अपने ग्रीष्मकाल के घर , 'बैथनी बीच '(स्थान का नाम), मिशिगन राज्य (अमेरिका) के निकट से गुज़र रहे थे, कैरन कार की पिछली सीट पर बैठी थी,अचानक वह खुश होते हुए बोली, ' पापा, आप जानते है हमारे तीन घर हैं ?' अचम्भित होते हुए उसके माता-पिता में से एक ने अपनी पाँच वर्षीय बच्ची की ओर मुड कर देखा और पूछा, ' इसका क्या अर्थ है, कैरन? ' उसने उत्तर दिया , ' हमारा एक घर इलीनोय राज्य (अमेरिका) में है, एक घर मिशिगन राज्य में और एक घर स्वर्ग

"मैं यहोवा को हर समय धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुँ ह से होती रहेगी। भजन संहिता (34:1)"

पृष्ठ 3 से ...बचाया गया जीवन

में।' उसके पिता को यह घटना अपने जीवन के आने वाले वर्षों में स्पष्ट याद रही।

कैरन जोनसन एक विशिष्ट व्यक्ति थी। उसके मित्रगण, लड़के और लड़कियाँ, उसे हमेशा बहुत ही नम्र और दूसरों की सहायता के लिए तत्पर पाते थे। जब वह हाई स्कूल पास करने वाली थी, उन्होंने उसे अश्चार्य में डालने के लिए एक पार्टी का आयोजन किया। 'सान मारीनो हाई स्कूल' में, उसके सहपाठी उसकी हार्दिकता और सौम्यता से इतने प्रभावित थे कि उन्होने उसे वरिष्ठों की वार्षिक पुस्तिका में 'बहुमुल्य मोती' की व्याख्या दी।

ऐसा क्या था जिसके कारण वह विशिष्ट थी? उसमें ऐसा क्या था जिसने उसे सैंकड़ों लोगों का आकर्षण बना दिया? ऐसा अनुभव होता है कि कैरन की मृत्यु उपरांत ही हम अनुभूति करने लगे हैं कि उसका प्रेम अपने उद्धारकर्ता की ओर कितना गहरा था। वह यीशु को इतना जानती थी कि इसने उसके किशोर मित्रों से संबंध को पूर्ण रूप ने नया बना दिया। ४ जून १९५९ को गुरूवार के दिन कैरन ने अपने स्कूल, 'सान मारिनो हाई स्कूल', से मिले गृहकार्य को पूरा कर लिया था। ५ जून १९५९ शुक्रवार को उसने अपने अध्यापक को गृहकार्य सौंप दिया। ६ जून १९५९ शनिवार के दिन, कैरन के शारीरिक जीवन का मोटरों की क्षण-भर की आमने-सामने की टक्कर की दुर्घटना में अन्त हो गया।

इस दुर्घटना के बाद ही उनके पड़ोस की लड़की ने जोनसन परिवार को याद दिलाया कि कैरन ने अपने स्कूल से मिले कार्य को स्कूल नें जमा करा दिया था। 'सान मारिनो स्कूल' के प्रधानाचार्य ने उसे खोजा और उसके माता-पिता को सौंप दिया। जोनसन परिवार ने उसे पहले कभी नहीं पढ़ा था। कैरन ने यह अपने हाई स्कूल की अंतिम परीक्षा के लिये लिखा था। इस
पत्र ने उसके प्रभु यीशु की ओर अगाध प्रेम को उजागर कर दिया।

कैरन का 'जीवन का तत्वज्ञान 'इस प्रकार आरंभ होता है ..' मेरी जीवन के विषय में मान्यता पवित्र बाईबल और परमेश्वर पर आधारित है, जिसे परमेश्वर ने स्वंय लिखा है। मैं जानती हूँ कि मेरे जीवन के लिये परमेश्वर की एक योजना है और दैनिक प्रार्थना और उसके वचन को पढ़ने के द्वारा मैं उसे जान सकूंगीं। जहाँ तक कि मेरे जीवन के कार्य या जीवन साथी का संबंध है, मैं इस निर्णय को परमेश्वर के हाथ में सौंप चुकी हूँ और जैसा 'वह' चाहे मैं करने को तैयार हूँ।

'मैं समझती हूँ कि यह तत्वज्ञान व्यावहारिक है और इसका अपने दैनिक जीवन में प्रयोग किया जा सकता है। हर निर्णय प्रभु के सम्मुख प्रार्थना में लाया जा सकता है और वह शांति जो यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता मानने के कारण मिली है, जिसे बहुत से लोग समझ भी नहीं सकते। कई लोग जीवन के उद्देश्य और कारण की खोज में लगे हैं। मैं जानती हूँ कि मैं इस धरती पर परमेश्वर के साथ सहभागिता और दूसरों को उसके पुत्र यीशु मसीह द्वारा लाये गये उद्धार में जीतने के लिये हूँ। मैं यह जानती हूँ कि मैं मृत्यु के पश्चात हमेशा के लिये 'उसके' पास रहने के लिये चली जाऊंगी। ....'

६ जून १९५९ के दिन जब वह मोटर दुर्घटना घटी, कैरन का परिवार अपने हिसपरिय पाम स्परिंग के घर पर आया हुआ था। जब उनका एक मित्र और दूसरे उसके साथ उनके घर के निकट आ रहे थे तो उसने भांप लिया कि कुछ गड़बड़ है। वह अपने केबिन से निकल कर उनसे मिलने के लिये आया और पूछा. 'क्या यह कैरन के विषय में है?' उनके मित्र ने दुखी होकर सारा वृतांत कह सुनाया कि क्या घटा और पूछा कि क्या वह एड (उसके पिता नाम) की सहायता उसके परिवार को सूचित करने के द्वारा कर सकता है। एड जोनसन ने उसका धन्यवाद दिया और कहा कि इसकी आवश्यकता नहीं है। वह वापस अपने केबिन में आया और अपने परिवार को अपने पास एकत्रित किया। यहाँ तक कि इस भयानक स्थिति में परमेश्वर ने शोक संतप्त पिता को सहारा दिया। एड ने इस प्रकार कहते हुए इस दुर्घटना की सूचना अपने परिवार को दी। 'इससे पहले कि हम परमेश्वर से यह प्रश्न करें कि उसने कैरन को क्यों बुला लिया। आओ पहले हम उसका धन्यवाद दें कि सतरह साल तक उसने हमें उसका साथ दिया।'

एक पुलिस अधिकारी ने, जो उस दुर्घटना के स्थान पर सबसे पहले पहुँचा था, एड जोनसन को एक ओर बुला कर पूछा, 'क्या तुम मसीह हो?', 'हाँ' एड जोनसन ने जवाब दिया। तब आफिसर ने बताया, 'मैं उसके चेहरे की मुस्कुराहट को कभी नहीं भूल सकता।'

सालों साल जोनसन परिवार ने लोगों से डब्बे भर कर पत्र प्राप्त किये हैं जिन्होंने कैरन के 'जीवन का तत्वज्ञान' पुस्तिका को पढ़ा। कइयों ने यह लिखा कि इस मान्यता को पढ़ने के पश्चात उन्होंने मसीह के पीछे चलने का निर्णय लिया और कई नवजवानों ने इसे पढ़ कर मसीह सेवकाई में भाग लेने का निर्णय लिया। आखिरकार जोनसन परिवार सही निकला। यह वास्तविकता में 'किशोरावस्था की विजय' थी। उनकी पुत्री कैरन अपने तीसरे घर में थी - प्रभु के साथ जिससे वह बेहद प्रेम करती थी।

- चुना गया।

स्वर्ग की झलक

मैंने एक दिव्य दर्शन पाया, जिसके कारण मैंने अपने मसीह जीवन को पहले की अपेक्षा अधिक गंभीरता से लिया।

इस दिव्य दर्शन में, मैंने अपने आपको मसीही क्रिया कलापों में कार्यरत पाया। मैंने मसीह सभाओं में भाग लिया, सण्डे स्कूल में पढ़ाया और मैं कभी-कभार रोगियों से मिलने जाता था। इन सभी कार्यों में मैं ईमानदार था और मेरा पाखंड करने का कोई उद्देश्य नही था। बल्कि मैं अपने को चमकती रोशनी समझता था। अचानक एक दिन मैं गंभीर रूप से बीमार हो गया और मरने पर था। लेकिन मैं आत्मिक जीवन पाया

मसीही था। तो मुझे इस बात का ज्ञान था कि मैं अपने उद्धारकर्ता की दया पर निर्भर कर सकता हूँ। तब मैं बेहोश हो गया और अचानक मैंने अपने आप को स्वर्ग में पाया । वहाँ पर परमेश्वर के संतो को देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

आरंभ में, मैं इस खुशी में खोया हुआ था कि मैं अब सुरक्षित और पाप के बंधन से मुक्त हूँ और यह सच्चाई थी । लेकिन बाद में , मैं उदास हो गया और अकेलापन महसूस करने लगा। मैं किसी तरह से इन संतो से मिल-जुल नहीं पा रहा था।

मेरे विचार , मेरे बीते हुए जीवन पर जाने लगे और वह एक फिल्म की भाँ ति मेरे सामने से गुज़रने लगे। लेकिन उस पर एक छोर से दूसरे छोर तक लिखा था 'क्षमा किया गया', 'ओह, परमेश्वर की स्तुति हो', मैंने सोचा,'अब मेरे पाप का कोई लेखा जोखा नहीं है।'

मेरे जीवन के लेखे पर एक झलक ही से , मैं बहुत ही अशांत हो गया। लेखे में मेरे विचार , भावनाएँ, काम इत्यादि दिखाए गए । उसने दिखाया कैसे और किस उद्देश्य के लिए मैंने अपना समय , योग्यता और पैसा, जो परमेश्वर ने मुझे सौंपा था , अपने धरती के जीवन में , मैंने कैसे उसका प्रयोग किया।

अब मैंने संसार को वैसे देखा, जैसा परमेश्वर को दिखाई देता है - कामुकता से भरा हुआ, व्यभिचार, घृणा, जादूटोना, लड़ाई, झूठ, गप-शप, विद्रोह, लालच, घमण्ड, पाखंड इत्यादि से भरा हुआ। अब मैंने करोड़ों को पाप में अंधा हुआ, लड़खड़ाते हुए नरक के गड्डे में गिरते हुए देखा । मानो, कोई उनकी चिन्ता न कर रहा हो। मैंने उन लोगों की भी चीत्कार सुनी , जो पाप के बंधन में जकड़े हुए थे । लेकिन मानो कोई उनकी सहायता करने को तैयार नहीं था।

मैं बहुत ही व्यस्त था (अपने धरती के जीवन में) मज़ा उड़ाते हुए , यहाँ तक की धार्मिक मज़ा। अब मैंने अपने को देखा और अपने जीवन की रीति को वैसे , जैसे परमेश्वर ने देखा था , इस बात की समझ आने पर कि मैंने स्वार्थी जीवन जीया हैं , मैं अचानक व्याकुल हो उठा।

'काश ऐसा हो कि मैं केवल अपने व्यर्थ किये जीवन को वापस पा सकूं।' मैंने सोचा, लेकिन वैसा अब असंभव था। मुझे धरती पर मिला अवसर अब पूरा हो चुका था । 'हे, परमेश्वर ' मैंने सोचा ,'मसीह को समर्पित एक और जीवन जीने के लिए मैं कुछ भी देने को तैयार हूँ।'

अचानक एक दिव्य संत मेरे पास आया। उसने कहा कि वह मुझसे वह कहानियाँ सुनने आया है कि कैसे मैनें आत्माओं को जीता और कैसे लोगों को मसीह के पास लाया और कैसे मैंने अपने जीवन में विजय पाई। मैं क्या कह पाता ? मुझे तो केवल वह याद आ रहा था , मेरा आरामपरस्त और आसानी से बिताया जीवन। मैंनें अपना जीवन तो अपने को खुश करने में लगाया था । उसने अपने बेटे के विषय में पूछा । उसका बेटा विद्रोह से भरा हुआ था और मेरे घर के नज़दीक रहता था। 'क्या तुमने उससे मसीह के बारे में बात की? क्या उसके उद्धार पाने की आशा है?', उसने पूछा।

जैसे ही मैंने यह प्रश्न सुना , मेरा दिल डूबने लगा। मैं क्या जबाव दे पाता ? मैं उस लड़के और उसकी समस्याओं के विषय में जानता था । लेकिन उसकी समस्याओं में न पड़ने की इच्छा के कारण मैंने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया था। उस लड़के के पिता ने मेरी चुप्पी को देख कर जवाब भाँप लिया होगा । उसने मेरी ओर निराशा की भावना से देखा और मेरे उपर खेद किया और धीरे से मुड़कर मुझसे दूर चला गया।

और तब मैंने एक और दिव्य व्यक्ति को देखा। यह वो विधवा थी, जिसने सांसारिक जीवन में बड़ी कठिनाईयाँ सहीं थी , लेकिन वह सभी बच्चों को मसीह में ला सकी । केवल अपनी सबसे छोटी बेटी को छोड़ कर। उसने मुझे बताया कि उसकी बेटी को संसार की तड़क-भड़क ने भटका दिया था। 'यदि किसी ने उसे मसीह का प्यार दिखाया होता , तो शायद उसकी आँखें खुल जाती ।' उसने कहा , 'तुम उसे जानते थे। क्या तुमने उससे बात करने के लिए समय निकाला ?' एक बार फिर मैं चुप था। मैंने अपना सिर झुकाया हुआ था क्योंकि मैं उसकी उत्तर सुनने की आशा करती नज़रों को नहीं सह सकता था।

जब मैं अपने ही विचारों में लीन था, एक और व्यक्ति मेरे सामने आया। यह उस व्यक्ति का दिव्य शरीर था, जो धरती पर काले लोगों में से एक था। उसने अपना परिचय दिया और मुझसे उस मसीही समूहों के विषय में पूछने लगा , जिनके साथ मिलकर उसने सेवा की थी । और उसके साथियों के विषय में जिन्हें वह पीछे छोड़ आया था , जिन्हें मैं भी जानता था। 'क्या तुमने उनकी मदद करने की कोशिश की ?',उसने पूछा , 'क्या तुम्हारा जीवन उनके लिए उदाहरण था? कृपया मुझे बताओ, क्या तुमने उन्हें उद्धार दिलवाने की कोशिश की?'

मैं इस समूह को जानता था। लेकिन मैंने कभी उनकी सहायता नहीं की और न ही उनका उत्साह बढ़ाया। मैंने यह तर्क दिया कि वे मेरे समूह से नहीं है। और मेरी विचारधारा नहीं रखते । और कई रीति से वे

मुझसे भिन्न थे । लेकिन स्वर्ग की स्पष्ट ज्योति में मैंने देखा कि मैं सिर से पैर तक आत्मिक घमंड से भरा हुआ था। 'हे परमेश्वर?' मैने सोचा,'क्या यह स्वर्ग है ?' क्या मेरे जीवन का स्वार्थ हमेशा- हमेशा के लिए मुझे कचोटता रहेगा ? प्रभु मैं अपने को इतना नीच और नालायक महसूस कर रहा हूँ। यदि केवल मैं अपने जीवन को एक बार फिर जी सकूं।

मैं केवल व्यथा से भरा था और सोच रहा था कि क्या मैं स्वर्ग में शांति पा सकूंगा। मैंने अपने जीवन को बेकार के उद्देश्यों में और क्षणिक आनंद पाने में बिता दिया था। जबकि मेरा जीवन ऐसे कार्यों से भरा जा सकता था, जिनके बोने के द्वारा मैंने कभी न अंत होने वाले स्वर्गीय ड्गलों को पाया होता।

तब मैंने एक अदभुत दृश्य देखा। युगों से , परमेश्वर के हजारों वफादार सेवक मेरे सामने से गुज़र रहे थे। वे देवताओं के समान दिख रहे थे और मैं उनके सौंदर्य और खुशी को पाने के लिए कुछ भी दाँव पर लगाने को तैयार था और फिर मैंने स्वंय राजाओं के राजा यीशु को देखा। उसने अपने व फादार सेवकों की ओर प्रेम , विश्वास और प्रशंसा की नज़र से देखा। मानो कह रहा हो , 'शाबास, मेरे वफादार भाईयो।' ओह, वह यीशु का निहारना। मैंने सोचा, यीशु से ऐसी एक मान्यता की निगाह पाने के लिए सौइयों बार जान गवाँना भी उचित है।

तब वह मेरी ओर मुडे और मेरे ऊपर दया की दृष्टि करते हुए बोले, 'तुम इन लोगों के साथ बहुत ही कम समरसता पाओगे । जिन्होंने मेरी महिमा, विश्वास, और आदर के लिए अपनी जान को दाँव पर लगाया है।'

'हे परमेश्वर , हे परमेश्वर ' मैंने पुकारा , 'मेरी शर्म को छिपा । काश, मैंने तेरे दिये हुए अवसरों का सही उपयोग, तेरी सेवा के लिए किया होता। मैंने क्यों ऐसे खोखले उद्दे श्यों और विलासता का पीछा किया ? प्रभु मेरी सहायता कर।'

दया हुई, वह केवल एक दर्शन ही था। मैं जगा और मैंने पाया कि मैं अभी धरती पर ही था । मेरे पास अभी भी मौका था कि मैं अपना जीवन उसके लिए जीऊँ , जिसने अपना सब कुछ मेरे लिए दाँव पर लगा दिया था।

- विलियम बूथ।